National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2023; 1(51): 219-220
© 2023 NJHSR
www.sanskritarticle.com

Dr. Dinakar Marathe
Director, Ratnagiri Sub-Centre, KKSU
Bharataratna Dr. Pandurang Vaman-Kane Sanskrit Adhyayan Kendra
Associate Professor, Department of Vedang Jyotisha Head, Dept of Indian Architecture, KKSU, Ramtek.

Correspondence:
Dr. Dinakar Marathe
Director, Ratnagiri Sub-Centre, KKSU
Bharataratna Dr. Pandurang Vaman-Kane Sanskrit Adhyayan Kendra
Associate Professor, Department of Vedang Jyotisha Head, Dept of Indian Architecture, KKSU, Ramtek.

पुराण विमर्श

डॉ. दिनकर मराठे

भारतीय साहित्य के महत्वपूर्ण ग्रंथों में श्रुति और स्मृति के बाद पुराणों का स्थान आता है। किसी भी धार्मिक अनुष्ठान के संकल्प में "श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थ" यह वाक्य होता है। श्रुति और स्मृति के फल के साथ-साथ हमें पुराणों में वर्णित फलों की भी आकांक्षा होती है। श्रुति, स्मृति और सूत्रकारों ने श्रौत और स्मार्त धर्म का अधिकार केवल त्रैवर्णिकों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) को दिया था। कम बुद्धि वाले लोग, शूद्र वर्ग, महिलाएँ और वे लोग जिनका उपनयन संस्कार नहीं हुआ था, वे वेदों में वर्णित विषयों को समझ सकें और उनके उत्थान हेतु पुराणों की रचना हुई। इस लेख में हम पुराणों की संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करेंगे।

पुराणों का उद्देश्य

सभी वर्णों, बल्कि संपूर्ण मानव जाति की आध्यात्मिक समानता के लिए पुराणों की रचना हुई। त्रैवर्णिकों की संकीर्ण सोच को पार कर यह ग्रंथ समावेशी बने। "एष साधारणतः पन्थाः साक्षात् कैवल्यसिद्धिदः" – अर्थात् पुराण सभी के लिए मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है।

पुराणों की दृष्टि 'लोके वेदे च' अर्थात लोक और वेद दोनों पर आधारित है। वेदविहित धर्म का सरल, सुबोध वर्णन कर वेदों के तत्वों को जनमानस में स्थापित करने का कार्य पुराणों ने किया।

पुराण शब्द की व्याख्या इस प्रकार की गई है:

- **"पुरा नवं भवति"** – अर्थात जो प्राचीन होते हुए भी नवीन है, वह पुराण है।
- **"यस्मात् पुरा ह्यनतीदं पुराणं तेन तत्स्मृतम्"** – अर्थात जो प्राचीन परंपरा का वर्णन करता है, वह पुराण कहलाता है।

पुराणों का विकास

पुराणों के दो प्रकार हैं – **महापुराण** और **उपपुराण**। सामान्यतः महापुराणों का उल्लेख "पुराण" नाम से किया जाता है और उपपुराणों से भिन्नता दिखाने के लिए इन्हें "महापुराण" कहा गया है। प्रारंभ में पुराणकथाएँ गाथाओं और राजवंशों के वृत्तांतों के रूप में बिखरी हुई थीं। सूत और बंदी नामक लोग इन कथाओं के ज्ञाता थे। ये तत्कालीन राजाओं के सेवक होते थे और राजवंशों की गाथाओं को संरक्षित रखते थे। जब अश्वमेध यज्ञ होता था, तो सूतों को बुलाया जाता था और वे राजाओं की स्तुति में आख्यान गाते थे।

पुराणों की रचना से संबंधित मान्यताएँ

1. **मत्स्य पुराण और वायु पुराण** के अनुसार ब्रह्मदेव ने पहले पुराणों की रचना की, फिर वेदों की।
2. **भागवत पुराण** के अनुसार ब्रह्मा ने अपने प्रत्येक मुख से एक वेद प्रकट किया और फिर चारों मुखों से एक साथ इतिहास-पुराणों की रचना की।

3. **अथर्ववेद** में कहा गया है कि वेदों, यज्ञों और देवताओं के साथ पुराणों की भी उत्पत्ति हुई।

4. विष्णु ने व्यास रूप में अवतार लेकर स्वर्ग में स्थित पुराण साहित्य को 18 महापुराणों में विभाजित किया।

5. माना जाता है कि मूल पुराण संहिता 100 करोड़ श्लोकों की थी, जिसे व्यास ने 4 लाख श्लोकों में संक्षिप्त किया और 18 पुराणों का निर्माण किया।

पुराणों के लक्षण

"सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वंतराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।"

अर्थात पुराणों के पाँच लक्षण होते हैं:

1. **सर्ग** – सृष्टि की उत्पत्ति
2. **प्रतिसर्ग** – सृष्टि का पुनरुत्पत्ति चक्र
3. **वंश** – देवता और ऋषियों के कुलों का विवरण
4. **मन्वंतर** – चौदह मन्वंतर (स्वायंभुव, स्वारोचिष, औत्तम, तामस, आदि)
5. **वंशानुचरित** – विभिन्न ऋषियों और राजाओं के चरित्र

हालाँकि, व्यावहारिक रूप से इन पाँचों लक्षणों का पूर्णतः पालन करने वाला कोई भी पुराण नहीं मिलता।

पुराणों की संख्या

महापुराण (18) और उनकी श्लोक संख्या

पुराण	श्लोक संख्या	पुराण	श्लोक संख्या
मत्स्य	14,000	वामन	10,000
मार्कंडेय	9,000	वराह	24,000
श्रीमद्भागवत	18,000	अग्नि	15,400
भविष्य	14,500	नारद	25,000
ब्रह्म	10,000	पद्म	55,000
ब्रह्मांड	12,000	लिंग	11,000
ब्रह्मवैवर्त	18,000	गरुड़	19,000
विष्णु	23,000	कूर्म	17,000
वायु	24,000	स्कंद	81,100

उपपुराण (18)

सनत्कुमार, नारसिंह, स्कंद, शिवधर्म, दुर्वासा, नारदीय, कपिल, वामन, औशनस, ब्रह्मांड, वरुण, कालिका, महेश्वर, साम्ब, सौर, पाराशर, मारिच, भास्कर।

पुराणों का महत्व

पुराणों में वेदविहित धर्म को सरल भाषा में समझाया गया है। प्राचीन भारत का इतिहास भी इनमें संग्रहीत है।

- महाभारत में कहा गया है कि इतिहास और पुराणों के बिना वे का पूर्ण ज्ञान संभव नहीं।
- स्कंद पुराण में उल्लेख है कि पुराण वेदों का आत्मा है।
- धार्मिक आख्यानों में विष्णु, शिव, प्रजापति के विभिन्न रूपों की कथाएँ हैं, वहीं लौकिक आख्यानों में राजाओं और देवताओं की गाथाएँ हैं।

निष्कर्ष

भारतीय परंपरा और इतिहास को समझने के लिए पुराणों जैसा कोई दूसरा साहित्य नहीं है। हालाँकि, कुछ पुराण विशेष संप्रदायों पर अधिक बल देते हैं और अतिशयोक्ति से भरे हैं, लेकिन फिर भी वेदों के गूढ़ अर्थ को समझने और भारतीय संस्कृति को जानने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वायुपुराण में कहा गया है

"जो चारों वेदों का ज्ञाता हो, यदि वह पुराणों से अनभिज्ञ हो, तो उसे विद्वान नहीं कहा जा सकता।"

इस प्रकार, पुराण न केवल धर्म, इतिहास और नीति का संग्रह हैं, बल्कि वे भारतीय जीवन का संपूर्ण दर्शन प्रस्तुत करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. Diksitar, V. R. Ramchandra, Purana Index, 3 Vols., Madras, 1955.
2. Kane. P. V. History of Dharmashastra Vol. V Part II and Vol. I Parts I, Poona, 1962.
3. Pusalkar, A. D. Studies in the Epics and Puranas of India, Bombay 1963.
4. Wilson, H. H. The Vishnu Purana, Vol.I, Caclcutta,1961.
5. Winternitz, M. A. History of Indian Literature Vol.I Cacutta,1927.
6. उपाध्याय, बलदेव, पुराणविमर्श, वाराणसी, १९६५.१२.
7. पाण्डेय, राजबली, पुराणविषयानुक्रमणी,काशी,१९५७. साळुंखे, आ. ह